

श्री रणवीर-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्
काश्मीर शैवदर्शन विभाग

प्रवेश संख्या - 24 - विषय :- शैव दर्शनम् क्रम सं. - 28 -

नाम अमरनाथ माहात्म्यम् ग्रन्थकार नाम - - - - -

पत्र सं. - 17 - अक्षर सं. (पंक्तौ) १०६ १५ पंक्ति सं. (पृष्ठे) - १३, १४ -

आकारः ६.५" x १" - - - - लिपिः शारदा - - - - आधारः कागज - - - -

वि. विवरणम् पूर्ण - - - - -

पर्यवेक्षकः - - - - -

दिनांकः १७-९-२०००

51

(१०)

86

५३

मन्त्रः

१४
१४

१४

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

तिनमः शिवाय भोगाय नमः तिनमः शिवाय गुरुवे नमः ॥ तिनमः शिवभूते ॥ ॥
 तिनमः शिवाय निःशेषकैः प्रसन्नमः सतिने ॥ त्रिगुणशक्तिरुद्धमः कवचवृत्तिरिति ॥ ॥
 तिस्रीं केशी ॥ सर्वसर्वं भद्रं देवमादिभानभरुतमम् ॥ पुष्टं हननुनग
 सुप्रदकैः भूवेडका ॥ मयूनामैः उभिसुभियार्भमनावलम् ॥ भाद्रभद्र
 द्वादशैः योतिर्द्वयसुतिपुष्टैः ॥ मकं गतिभवाप्येति वरुणीं प्रमया निठ ॥ ॥
 सुकेशवः ॥ ॥ सुगन्धविभूषणभियार्भमनावलम् ॥ यं सुद्वयधिनः पु
 ष्ठं भापुयातीरुं प्रियम् ॥ यद्भद्रं द्वादशैः योतिर्द्वयसुतियेनः ॥ ॥
 मया तिनकं ज्येष्ठं तीर्त्तुं दीप्तं पाउकी ॥

॥ सुमेधैः पकेः उत शिवपतिः उतः परम् ॥ ॥

॥ उतैः पद्मसुपद्मैः पुष्टैः गन्धभूमिप्रियैः ॥ पद्मप्रगमिभूकैः भद्रययामः परम् ॥
 ॥ उतैः यवहं मिष्टैः वरुणैः भिन्नकैः उतैः ॥ उतैः पद्मसुपद्मैः लभन्तं भद्रनागभूमिभिः ॥
 ॥ द्वादशैः योतिर्द्वयसुतिपुष्टैः ॥ त्रिगुणशक्तिरुद्धमः कवचवृत्तिरिति ॥ ॥
 गम् ॥ सुपद्मैः उतैः भद्रादृगिर्द्वयपद्मैः ॥ वरुणसुमेधभूमिभिः

तं
 म.
 म.
 न.
 म.

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

पुत्रपायैः केरिः क म म सुवेः ॥ म जन मे जन सु पि पु ल ना सु पि व क न अ ॥
 ॥ म भ ग स मु नि द्रु म भ ह उ भ वा कि लि धैः ॥ प द्मा न नि वि उ भ यं प्रि क्ता नि र ग
 म भि क्ते ॥ म पु र म सा नि मे वे मि भु ना हृ हृ र ध र गि ॥ इ ये विं सा ठि य य द्वा
 ॥ म उ हृ म न स ग ॥ १ वं द ह न गे य द्वां प म्ने लि द्वां र म भु क मा ॥ या डि के ग व
 ॥ के ड् वै य र न भि द ड् द ड् मा ॥ १० डि म भ ग स य द्वां यं प्रु मः प ए लः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ मी ठे र दी ॥ ॥ ॥ म भु ल ग्ग भ म द ड् मू द्वा पी ड् म भु म्भु ॥ ॥ ॥ ॥
 नो म्भे उ भि म्भु मि ड्
 न ग य ग ठि य मा ॥ य म्भु क्क ग व म्भु चं उ म्भे ड् ड् ड् ड् ड् ड् ड् ड् ड् ड् ड् ड् ड् ड्
 ॥ म्भु व क्के भ र म्भु वि ड्
 ड्
 ठाः मि वे ॥ म्भु भु ये र म्भु ड्
 ड्
 व ड् ड् ड् ड् ॥ वि ड्

विं
 म.
 म.
 न.
 म.
 १

३
 ठगवाविष्णु उच्चनभीयिवान्मुकुः ॥ भमाठिभुक्तामुखाउं ठगवतुंभन
 तुनभा ॥ उऊयैऊयभरुभा पूं प्रुमः वभिडाः ॥ ॥ व नीनलीभुउम
 हसं प्रुदुनुल्लल्लकल्लभा ॥ सल्लमरुगळपम्प पल्लिं पापळंठुगिभा ॥
 ॥ गरुळुं पंगंविष्णु गिगपामयेऊयना ॥ ॥ यधयः ॥ ॥ उं भळ विष्णुप
 कुविष्णु पगल्लभा सुभुपिंमिपि विष्णुवगिष्णुभा ॥ गगीयं मंठगभदं वभि
 पुं प्रुपुष्टि भसगल्लं हं विष्णुभा ॥ ॥ वेळुळुं वेळुळुं पुगल्लं वं वेळुळुं व
 गं हं सगल्लभा ॥ ॥ दिगल्ल गळुभामिळुं व दिगल्लं व दिगल्लं गळुं सगल्लं हं
 प्रुपुष्टि ॥ इल्लिकनूषं नैकपुल्लेसभीसं नैकगळं नैकवळुं भदसभा ॥ ॥
 ॥ नैकगळं नैकसुळुं पंगल्लं नैकळुं कं हं सगल्लं प्रुपुष्टि ॥ विड्डाहल्ल वनीभुगू
 ऊपं कल्लं वळुं उळुं वेळुं हं भा ॥ ॥ कल्लं प्रुभं मं प्रुभुळुं पंगल्लं व भदन
 हं सगल्लं भुपेभिदिहभा ॥ प्रुभादल्लं गगळुं वामिउतुं रुपुंभनः पकि
 ल्लं प्रुल्लं भुह ॥ ससगल्लं पंगिगुळुं डिभं हं भळ निधळं सगल्लं प्रुपुष्टि ॥ ॥
 ॥ सनहृत्तं मविडां भल्लं सं पुगल्लं ननं वं नं वं लयभानभा ॥ ॥ वेळुळुं वेळुळुं भा

3

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

ॐ
रु.
न.
न.
भा.
५

ॐ
म.
म.
म.

4.11

याति सडकलं नभंमयः॥ सुठ्ठमठानवेकैश्च भद्रपीडाम्भुच्छि॥ नगनालिपुत्रपाथैः
 ॥ ब्रह्मरुद्रात्मिकेष्टिभिः॥ कुर्येकुर्येकिभक्तैर्न नः पाडकवाक्कल॥ दृगुतीर्जंमभाभा
 ह भृष्टुडेभवकिनिधता॥ ॥ श्रीकैवली॥ दृगुक्तेभुभारुं सुद्वपीडाम्भुच्छि
 व॥ परिमीलवनेपुष्टभरुपाडकनामनभा॥ ॥ ५॥ मनीसुड भिसुभिनीलगहं
 पगभपि॥ यंमुद्राभृष्टुडे॥ दुः कष्टि॥ मठवैरथैः॥ ॥ श्रीकैवली॥ ॥ उरुति
 नीलगहयः॥ सु॥ पगभपावनभा॥ यंमुद्राधुपुडेभृष्टुगिधुभरुलंप्रिये॥
 ॥ एकमस्मीरुतमुष्टुमिवधुवरवलिनि॥ मठुभोगुमंलपे गृहैः श्रीरुनके
 गपि॥ मकि॥ मीमुष्टुभुष्टुः पावडाववलिनि॥ कलालूनजोवमनं भम
 ऊरुभृष्टुच्छि॥ कलालूनद्विउंमुष्टुभापंमवमुष्टुपावडी॥ मज्जयाभाम
 वैउमै॥ हाम्भंविभलंउम॥ मुष्टुपुष्टुनजंवमनं भंमवठगवहृः॥ ॥ ६॥ ॥ ६॥
 गेकमुष्टुमनं कलालूनमभंप्रिये॥ पुकलयामभउम वमनं गहयामिव॥
 ॥ भवगहभभुन कलालूननिठेठवडा॥ नीलगहउतिविपुष्टुभरुपाड
 कनामिनी॥ नीलगहंनः भुद्रा भवपाथैः पुष्टुडे॥ नीलगहभृष्टुमापि
 येमृष्टुमृष्टुकभृके॥ भयतिबुद्धमनयद्रगदानसेमडे॥ नीलगहनमी
 उरि भद्राभृष्टुकिनिधता॥ नीलगहपुभाभृष्टुलंप्रियेउभभा॥

ति
 म.
 म.
 न.
 भा.

7

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

ॐ प्रोक्ता प्राविदिः प्रसादिनिगितमः ॥ कुरु कुरु प्रयागे गङ्गा भाग
 भद्रमे भद्रं यदुत्तमा प्रोडिउडे समुद्रमज्ञनाडा ॥ गिरिगिरिदलमविश
 वनेगिरिविचवः ॥ डावतिवलयया निधुप्रोदेवनमंसयः ॥ नैमिषेयपू
 यगेम कुरुकोडे उदेवम ॥ भद्रयदुत्तमा प्रोडिउडे समुद्रमज्ञनाडा ॥ साग
 लमुः सउगुलं भद्रभूक्तलएदुत्तनाडा ॥ नहुं भानभकेडुपेसादिनिगित
 मृडे ॥ सुगुं भिसूडेयमु गिरिगिरिविभमनुतः ॥ म्रीम्रीम्रीमिडिकलेम
 ॐ भंभद्रमनुमृगडा ॥ भद्रुठवनया डियडगडनमेमडि ॥ भद्रुडिभेरु
 उल्टानि पथानियमिभुगि ॥ डावधूमज्ञनामेवनमसायाडिउडे
 भा ॥ भयाडिममिवभुनेयडनाभियडवडभा ॥ विपिनयेनगेदेवि
 यधभानकडेनः ॥ पथभद्रमपिधुडय ॥ भिजनाम ॥ यधंभद्र
 मिवंवल्लडा ॥ यधमज्ञनमडे ॥ नगेयाडिपंथमभा ॥ नमभुगे
 डिक्वेमे पृष्टं यधगिरिनाः ॥ सुगुं भक्तिभप्रेडि भद्रंभद्रंनमंसयः ॥
 ॥ डिप्रोक्ताभयमेवि यधसुभादिभगिरेः ॥ सुडेनष्टः पठिडेभद्रपा
 डकनासनः ॥ ॐ धपएलगुदुः प्रोक्ताधुववगनने ॥ सुडसुपठिउसुपि
 ॥ ॐ डिप्रोक्ताभियदु मश ॥ ॥ ॐ डिमीमुठसुनेयधमद्रु नमवधुः ॥ ॥ ॥
 ॥ पएलः ॥ सुगुं ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ
सः
मः
नः
भः

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

॥ गं कभरकं नृयेडा ॥ भय डिमिवभयुष्टे भिडिभट्टवम भिडे ॥ यः कस्मिन् धिक् वसि
 ॥ भट्ट गडु गडं नृयेडा ॥ गडु मे भयुष्टे ॥ नृगि डिभट्टे नडे सये ॥ कैरवी ॥ गडु गगन सुके
 व किमं जं व भुपिडः ॥ किं नं निः भूडं नं नग ॥ भट्ट उड्डम ॥ सी कै रवः ॥ ॥ ॥
 ॥ भट्ट वक्र भट्ट मे वि गडु गगन भट्ट भमा ॥ यमु ड भट्ट उ ॥ नृ ड्ड प ड क प ड्ड गडा ॥
 ॥ भूगन निन भ भट्ट क सं मे व वि व मिनः ॥ ॥ उ नि ध क मु न धन दय य मु प ग भ मा ॥
 ॥ भूगे वि न प गे न्नी पू लि प ड्ड प गे ड्ड मा ॥ ॥ नृ ड्ड क म वि ड्ड भिं म ड्ड म भू ग प्र सि ड्डे ॥
 ॥ क ग व क ॥ भू गे न क न व ॥ ग ड्ड कः ॥ उ मि र भि क सं भु मे मे वे कः ॥ डि म सु र मा ॥
 ॥ भन वि ड्ड प य भ म ड्ड प ॥ उ व ड्ड ल मा ॥ भू ड्ड न नि व मे मे वि ड्ड रं भे व ड्डं भू म ॥
 ॥ ग ड्ड ॥ नृ ड्डं न नि किं ज व डि म उ भू गः ॥ ग ड्ड ग भिं भ भू क प य भु म भ न ड्डः ॥
 ॥ य ड्डे नि भू ग ॥ स जिं न ल क नु भू ग भू गः ॥ ॥ भट्ट म भू म ड्ड ग ॥ ॥
 ॥ भट्ट भू भू म भू ड्ड ॥ ग ड्ड ग भू क ग ये डा ॥ ग ड्ड ग भिं भू ग डि यः क स्मि न न वः धि ये ॥
 ॥ भय डिमिवभयुष्टे न भू न भू ड्ड प क वे डा ॥ यः क स्मि न धि म स नि क ॥ ड्ड ग ड्ड न गे ॥
 ॥ भट्ट ड्ड पि ड्ड ड्ड म पि भू ग प ड्ड ड्ड पि म ॥ भू य डि प ग भं मि वं पं भ ड्डे सु रं धि ये ॥ ॥
 ॥ भट्ट प ड्ड क य ड्डे व य ड्डे व ड्ड प य ड्डे ॥ मे पि भू वि भू ड्ड ग ड्ड ग भिं नि भू ड्डः ॥
 ॥ क न्ते प य डिः ॥ नृ ड्डं उ भू ड्डे वि ड्ड ड्ड यि ॥ उ म सु य भू मे वे सि ग ड्ड ग गं भू ड्ड म ॥
 ॥ गे ल गे ज ड्ड व पि यः क स्मि न डि भू ड्डः ॥ भट्टे ड्ड ग ॥ मे वि मे डि भू ड्डे न ड्डे स ये ॥
 ॥ भू ड्ड भू ग व ड्डे प ड्डं न न्नी पं भ भू व नी मा ॥ भू ड्ड भि ड्डे ड्डं भू ड्ड भू भू ग सु र मा ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ डि मी क भ क ग ड्ड ग ग भ डि भ न भ प ड्ड नः न व भः ॥ ॥ ॥ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यमेव य नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मुनिं परमपरां नीमा ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 भगवन्महाभक्तः ॥ कथयति सुयतः भवं भगवन्महाभक्तः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सुदृग्भवः भवभवः ॥ प्रहसन्मुद्रं भद्रं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वसः भगवन्महाभक्तः ॥ प्रहसन्मुद्रं भद्रं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दामिगभगवन्महाभक्तः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 पीठनाट्टात्रिः भगवन्महाभक्तः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 गवती ॥ यवन्महाभक्तः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 गतः ॥ प्रहसन्मुद्रं भद्रं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सुगि ॥ उष्ट्रवन्महाभक्तः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दिउक् ॥ भुया ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वि.
 म.
 न.
 म.
 ०३

उ३ः प्रकृतिमिति मममेसाष्टमभुमभा प्रहं परमकंमेव प्रिकोणुतिमभुति
 ननुमममवउउ निहंउमभेमुमा मेवः प्रमकिनीदहंभुमभयभाययुः
 सीरुवः ॥ ७ विमुदुवंगंमेव नभमेमभेमुति उमप्रकृतिनीनेकुमिगि
 दनुगदः ममममकलंगुहमेवानंकिअकभुय भुदुसंमकंगमु उम
 हैदभेमुगः भुदुदीनयउमेविभंमुगदः भुगः उ३ः पुजं पुगविदिम
 भुमुमंल्लकभा कवभंमगदुति ठकु नंममुगः मयभा यमुजनउउः
 पुजं हभमेसाष्टमभुमभा ममप्रकृतिप्रलतु कलंगुहउमिमुगः
 उ३ः पुजंउउइह ठगवनभेमुगः यादुमुगभान मेव लभंमनसनभा
 भेकमुदप्रमंयभा डेकुमभंमंल्लकभा ७ मंमभयनिहंमदप्रमभमभु
 वभा भकननप्रमंमेविउवभेददिकुमिउभा यइंदहउमेवेमि भुदु
 भउवडील्ल ठभुनपुमपुनि किमप्रिडिभानवः गदउउउवेमे
 विगुदयंगभुगिउः भदुगकः कविउउः परमभवनः यः भवभः
 गुदभुमपुपेमुनिहंभुमभा मयाडिनकंपंगयवदिनुमउदुम यः प
 मुदेभदीनपुः मयानिहंभननुनभा भकुप्रीमठवेमुवि लुलनमनि
 मनि यइभदुविमेविपमुदेहभेमुगभा मयाडिनगुहउउकन
 कविमडिभा येतहउउवेमेविपमुदिगिगुदउ गमनिहंमवदेवडीउदेदी
 नभंसयः॥

॥
सः
मः
नः
भः
०८

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

सि
मः
मः
नः
मः
०५

तं भुवः पृथ्व्यां विद्यते कृत्वा भुवनं ५६ मृदुभग्नमापुं जीतो धर्मयावने
 यः भुवः स यममसुवदं गदः भुवमा उडुसुकविडाय सुवदं पृथ्वीने
 सुवदं सुक्तपके उयदवविणनः यः प्रयसुं निभया भुवनिदं भनतुन मा
 यगडिमेवंपदं मेपि पसुयमविवालिः यः सुवदं मदुवि प्रयसुं निभयगमा
 निदं भग्नमापुं भयाडिमिवमविणं भुवनं वदं वेमिनिदं सुगं गीमडः
 पथकादुक्तनिदुं यडिमैवंपदं पदमा वगं भुवमसुं प्रयगसुमडं भु
 उमा मदभुगुलि उं वि नैमिधदुलपुनडा भुपुल्लनं प्रुं भयाडवदिउ
 सुय मिदुं वदमदं उतिदुं प्रुणनडा भवन्तपुयमुं ठिः केभैवप
 दं भुयडा उडुलं भुमवपुडिगमालिदुं प्रुणनडा भुजुठिः भुल्लपुयं
 प्रुभुगुसुनरि नगभकिभवपुडिभदं भदं वगनने महसुवि विणं भुवः
 प्रुयैदुं भदं सुगमा प्रुयैदीपे सुनैवेदुः ५६ भपुडियागलमा सुगैरिं
 भदं सुपुण्डा किं कुरियः डिलडेल ठिपुं व भयाडिधमं गडिमा
 अडगुल्लभयुं यप्रययडिभुनरि भवपापविनिदुं यडिभदं सुपदमा
 प्रुयैके चं वेमियः कुदं भग्नसुं यमवसुपुल्लं सुभग्नविभदं सुगमा
 उं वदपिदं सुपिपुल्लभतिः डिभुडः यदुः कुरि उडुः ५६ भभग्नविणं
 उडुं कयडं यडि गडिभदं नडमय

मन्त्रविद्वद्गणपत्यै नमः ॥ यमभययेता सुगन्धसुखमिदं किमु नैः ॥ ५ ॥ यिद्वन्मन्त्रमवैशुभा
 र्मैः सुउपैरिद्वैभुवायल्लेखवीडकैः ॥ मकेलकिमुनिद्वैसुभन्मेनंभमासुगता यइ
 भादल्लेखैसुहभग्मसुमा ॥ ६ ॥ य पी० भमात्रिउंमिद्वं भुवमेकिगल्लेखता भाद्रपदयम
 दमेवठियभंमभगगता मयिउंइद्वैभुवायल्लेखयमभद्वन ॥ ७ ॥ यं गृहं विप्रम
 भुविद्वैभुवायल्लेखयमभद्वन पी० हभगगता मयिउंइद्वैभुवायल्लेखयमभद्वन ॥ ८ ॥ यं गृहं विप्रम
 वद्वैभुवायल्लेखयमभद्वन पी० हभगगता मयिउंइद्वैभुवायल्लेखयमभद्वन ॥ ९ ॥ यं गृहं विप्रम
 भगपानभयीसुगि गदहचउठधिवै रूयंनेठभवापिवा परगगठिगाभि
 इं पगीवामपरमुवा लभभुक्कंयद्वैभुवायल्लेखयमभद्वन ॥ १० ॥ यं गृहं विप्रम
 पी० गगतामदेसुगि ॥ ११ ॥ यिभन्ने ॥ मेमि पी० विप्रयगगद्वै ॥ १२ ॥ यमभयप्रेकुभि
 मंउवनये गगतामपी० भुपगंयुगसुमा मयिउंइद्वैभुवायल्लेखयमभद्वन ॥ १३ ॥ यं गृहं विप्रम
 न्दल्लेखयमभद्वन ॥ १४ ॥ यं गृहं विप्रम
 कलेमिद्विपुमंयल्लेखयमभद्वन ॥ १५ ॥ यं गृहं विप्रम
 उभिगंभुनं पावद्वैभुवायल्लेखयमभद्वन ॥ १६ ॥ यं गृहं विप्रम
 भद्वगल्लेखयमभद्वन ॥ १७ ॥ यं गृहं विप्रम
 पकुपद्वैः पुवैसु ॥ १८ ॥ यं गृहं विप्रम
 ॥ १९ ॥ यं गृहं विप्रम
 ॥ २० ॥ यं गृहं विप्रम

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली
श्री हनुमान् चालीसा स्तोत्र विद्यापीठ
मीनगर केन्द्र

यष्टुहणारुद्रमिमाकुरुमिवैयः भद्रं सुतीक्ष्णयशस्यमपि सुमति
यष्टुमपि सुतीक्ष्णमिमादिप्रत्ययकारिणी यष्टुविष्णुप्रियामिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
उत्तुमपि यष्टुमदिद्वयमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण गङ्गाप्रियादिम्वसुमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
पुष्टिमिवम्वसु यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
मुष्टुपङ्कजगङ्गायं उति यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
वसुपङ्कजगङ्गायं उति यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
भुक्तिमिवममपि उति विनामम्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
सूतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
निपिडोपगोपलनं म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण
म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुममनिवैयः उतिमन्त्रं म्वसुमि यष्टुमिदंमिवमन्त्रिसुतीक्ष्ण

ॐ
न.
म.
क.
भा
००

